



DAWAT-I-ISLAM

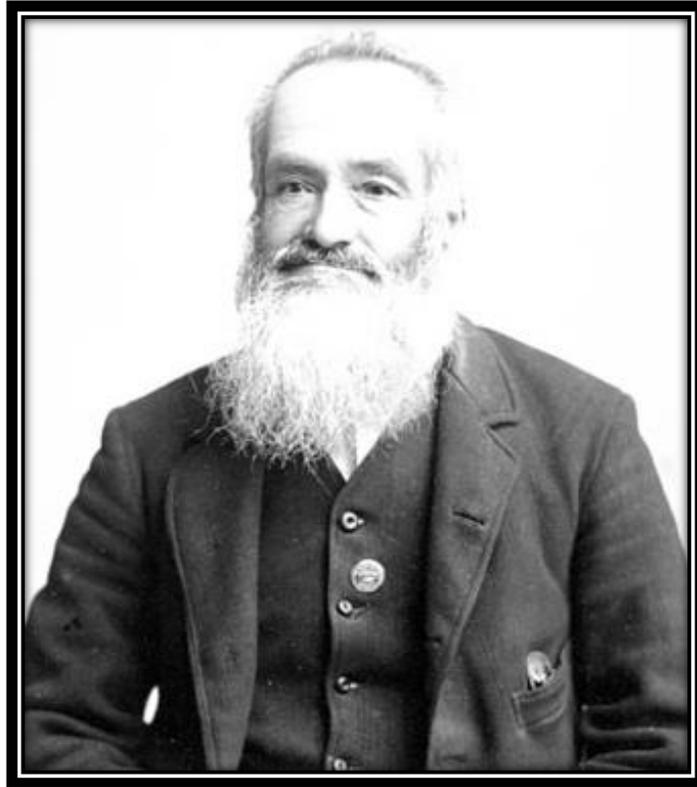
दावत ए इस्लामी

अल्लामा सर विलीयम मीयूर साहब

1903



By
The Late Sir William Muir



REV.SIR
MUIR

The Late
WILLIAM

27 April 1819 – 11 July 1905

Scottish Orientalist, scholar of Islam

N.I.T.S.

Muslim's Invited to Read the Bible

By

The Late REV. SIR WILLIAM MUIR

Dawat-i-Islam

दावत ए इस्लाम

जिसको जनाब पादरी जोएल डेविड साहिब मरहूम ने बाआनत पादरी एस-निहाल
सिंग-बी-ए-जनाब सर विलीयम मियूर साहिब बहादुर-एल-एल-डी-की किताब
मुस्लिम इन्वाइटेड टू रीड दी बाइबल से तर्जुमा किया

और

नार्थ इंडिया क्रिश्चन ट्रेक्ट एंड बुक सोसाईटी

इलाहबाद

ने

इंडियन क्रिश्चन प्रेस इलाहाबाद में तबअ करा के शाए किया

1903 ईस्वी

दावत

कि अहले इस्लाम किताब अहले यहूद व नसारा
का मुतालआ फ़रमाएं

कुरआन में तौरैत व इंजील की तारीफ़ आई है

मैं मुसलमानों की सोहबत में तक्ररीबन चालीस बरस तक रहा हूँ और उन में मेरे बहुत से मुअज़्ज़िज़ अहबाब हैं मगर मैंने शाज़ोनादर उन के पास या उन के मकानों में कोई नुस्खा तौरैत या इंजील का देखा और इस बात पर मुझे बड़ी हैरत है क्योंकि मेरे यार गारो आश्राएयाँ गमख़वार हमेशा कुरआन की तिलावत किया करते हैं और इस में अहले-किताब के ईलाही नविशतों की बराबर तारीफ़ आई है और उन मुकाशफ़ात आस्मानी की भी जो इन नविशतों में शामिल हैं। जाये ताज़्जुब है कि हम अपने अहबाब अहले इस्लाम को इन किताबों का मुतालआ करते नहीं देखते जिनकी तारीफ़ उन की इल्हामी किताब में शुरू से आख़िर तक पाई जाती है और जो इन बातों से पुर हैं जो मोमिनीन के हिदायत और रहनुमाई के लिए ज़रूर हैं मुझे बड़ा शतयाक्र है कि वो आप दर्याफ़्त कर लें कि इन के नबी की तालीम तौरात व इंजील की निस्बत कैसी सच्ची और बरहक़ है पस वो इस गरज़ के पूरा करने के लिए पाक नविशतों के नुस्खा जो बाआसानी दस्तयाब हो सकते हैं हासिल करें और उन का मुतालआ करके ग़ौर फ़रमाएं कि कुरआन में उन की ख़ूबी और मंजिलत की कैसी ज़बरदस्त शहादत पाई जाती है।

इसी गरज़ से मैं अपने अहबाब अहले इस्लाम की ख़िदमत में ये रिसाला पेश करता हूँ और मुल्तमिस हूँ कि वो मज़ामीन ज़ेल पर ग़ौर फ़रमाएं :-

अव्वल तौरैत, ज़बूर और इंजील की फ़ज़ीलत और उन के मिंजानिब अल्लाह होने के सबूत में कुरआन की चंद आयात पेश करूंगा।

दोम ये साबित करूंगा कि वो सहीफ़े जो अब हमारे पास मौजूद हैं कलाम-ए-ईलाही हैं जिनकी तारीफ़ व तौसिफ़ उन के नबी ने बारहा की है और यह कहा है कि उन पर गवाही देना मुझ पर फ़र्ज़ है।

सोम चंद नसीहतें अख़ज़ करूंगा जो बनी-आदम की दुनिया व अक़बा की बहबूदी के लिए नाज़िल हुए हैं।

उम्मीद है कि हमारे मुसलमान भाई जब बाइबल मुकद्दस की तालीम की खूबी देखेंगे और यह बात मालूम करेंगे कि ये तालीम किस क्रम में उस सना व सिफत के मुताबिक है जो उन की निस्वत कुरआन में पाई जाती है तो खुद उसे अपने पास रखेंगे और ये मानेंगे कि उनके नबी ने बाइबल के मानने और उस की तालीम पर चलने की हिदायत यहूदी और गैर क्रौम दोनों पर हमेशा बड़े शद-ओ-मद से की है तो हमारे अक्रीदे और ईमान की जान पहचान कर क्रम करेंगे।

शहादत-ए-कुरआनी बरकुतुब-ए-रब्बानी यानी

कुतुब-ए-मुकद्दसा अहले यहूद व नसारा

कुरआन में किस कसरत के

साथ ईलाही मुकाशफात गुज़शता की निस्वत

शहादत आई है

ऐ मुसलमान दोस्तो आप जो रोज़मर्रा कुरआन की तिलावत करते या उसे ज़बानी पढ़ते हो ज़रूर मालूम क्या होगा कि कुरआन अगली इल्हामी किताबों के हवालों से मामूर है इस में शुरू से आख़िर तक ये पाया जाता है कि वो ऐसी किताबें हैं कि आप लोगों के नबी के नसाएह व पन्द की खास गरज़ ये थी कि उन्हें मोअतबर ठहराएँ और वह हमेशा इस बात की नसहीत करने पर मुस्तइद रहते थे कि यहूदी और ईसाईयों पर फ़र्ज़ है कि इन किताबों के अहकाम पर अमल करें। पस इस तरह की ग़ैर-मुतगय्यर शहादत जो कभी कहीं नज़र से गुज़री हो कुरआन में यूं आई है कि **مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ** यानी कुरआन उन सहीफ़ों की जो पेशतर नाज़िल हुए और तुम्हारे यानी यहूदी और ईसाईयों के पास या उनके हाथ में मौजूद हैं तस्दीक करता है ये शहादत कुरआन में अस्सी (80) दफ़ा आई है कि दो तीन हवालों से ज़्यादा पेश करना फ़ुज़ूल है इस लिए मैं चंद ही हवाले बतौर मिसाल अख़ज़ करता हूँ ।

जबकि मक्का के बुतपरस्त बाशिंदों ने आपके नबी को शायर और मजनून कहा तो उन को हिदायत हुई कि यूं जवाब दें :-

सुरह अल-सफ़फ़ात "वो आया है साथ लेकर सच्चाई और तस्दीक करता है उन रसूलों की जो हुए उस से आगे।"

फिर सुरह बकर में यहूदीयों से यूं ख़िताब किया है :-

"ऐ बनी-इस्राईल याद करो हमारा एहसान जो हमने किया तुम पर और पूरा करो करार मेरा और मेरा ही डर रखो और मानो जो कुछ हमने उतारा सच्च बताता तुम्हारे पास वाले को।"

और फिर सुरह निसा में यूँ आया है :-

"ऐ किताब वालो ईमान लाओ उस पर जो हमने नाज़िल क्या सच्च बताता है तुम्हारे पास वाले को।"

अब कुछ ज़रूर नहीं कि मैं और हवाले पेश करूँ क्योंकि आप उस के रोज़मर्रा तिलावत करने से खूब वाकिफ़ हैं कि कुरआन में बीसियों मुक़ाम पर ऐसी शहादत आई है जो अगली किताबों की तस्दीक़ करती है। पस ऐ मेरे दोस्तो आप लोगों को बड़ी ताज़ीम के साथ इन पर लिहाज़ करना चाहिए जिनका तज़क़िरा इस क़दर आपके नबी ने किया है यानी ये कलाम-ए-ईलाही है जो इन्सानों की हिदायत के वास्ते आस्मान से उतरा है इस के मज़मूनों से आप लोगों को आगाह होना लाज़िम है अब आगे मैं ज़ाहिर करूँगा कि कुरआन में हमारे सहाइफ़ आस्मानी की क्या-क्या तारीफ़ आई है।

इस बयान में कि तौरेत ज़बूर और इंजील की तारीफ़ कुरआन में आई है और उनके मुतालआ करने का हुक्म अहले- किताब को दिया गया है

अज़-बस-कि किताब मुक़द्दसा अहले यहूद-ओ-नसारा ऐसे अफ़ज़ल हैं और उनकी निस्वत आपके नबी ने इस कसरत से शहादत दी है मैं चंद आयतें कुरआन से अख़ज़ करता हूँ जिनसे उनकी क़दर-ओ-मनज़िलत आश्कारा होती हैं ये आयतें बित्तफ़सील एक किताब मुसम्मा बशहादत कुरआनी बरकुतुब रब्बानी में मुंदरज की गई हैं और वो नॉर्थ इंडिया ट्रेक्ट सोसाइटी इलाहाबाद की तरफ़ से तबअ की गई है और वहां से बाआसानी दस्तयाब हो सकती है शायद ये आपकी नज़र से गुज़री हो और अगर आप की नज़र से ना गुज़री हो तो उसे मेरी ख़ातिर से मंगा कर मुलाहिज़ा फ़रमाए यहां इतना ही ज़रूर है कि मैं इस में चंद ख़ास आयतें इस रिसाला में नक़ल करूँ।

पहले उन आयतों को पेश करता हूँ जो कुतुब अहले यहूद पर शहादत देती हैं।

सुरह साफ़फ़ात" और हमने एहसान किया मूसा और हारून पर और बचा दिया हमने उनकी और उनकी क़ौम को हर घबराहट से और उनकी मदद की हमने तार है वही ज़बर और दी उन को किताब वसीअ और समझाई उन को सीधी राह।

जबकि मक्का के बुत परस्तों ने कुरआन को रद्द किया और यह कहा कि ये एक लगू क़दीम है तो उस के जवाब में सुरह अह्काफ़ में यूं आया है :-

हालाँकि इस से पहले किताब मूसा ईमान और रहमत है और ये किताब ज़बानी अरबी में उस की तस्दीक़ करती है ताकि मुतनब्बा करे गुनाहगारों को और बशारत है नेक करने वालों के लिए।

सुरह मर्यम” और बतहक़ीक़ हमने मूसा को हिदायत और विरासत में दी बनी-इस्राईल को किताब राह दिखाने वाली और याद दिलाने वाली समझ वालों को।

सुरह हूद” और उसके (मुहम्मद) क़ब्ल है किताब मूसा ईमान और रहमत ।

सुरह इनआम” फिर हमने मूसा को किताब दी जो अहसन बात पर कामिल है और हर शैय की तफ़्सील और हिदायत और रहमत है कि शायद ये लोग अपने रब से मिलने पर ईमान लावें।

सुरह किसस” और बतहक़ीक़ पहले ज़माने वालों के हलाक़ करने के बाद हम ने मूसा को किताब दी (कि जो) आदमीयों के वास्ते बसीरत और हिदायत और रहमत है शायद कि वो लोग नसीहत क़बूल करें।

सुरह अम्बिया” और बतहक़ीक़ हमने दिया मूसा और हारून को अल-फ़ुरक़ान (यानी) इम्तियाज़ और रोशनी और नसीहत और ख़ुदा परस्तों के वास्ते जो अपने रब से डरते हैं और उस घड़ी (यानी क्रियामत) से काँपते हैं।

सुरह माइदा हमने उतारी तौरैत इस में हिदायत और रोशनी उस पर हुक़म करते पैग़म्बर जो हुक़मबरदार थे यहूद को और दरवेश को और आलिम को इस वास्ते कि निगहबान ठहराए थे अल्लाह की किताब पर और उस के ख़बरदार थे।

सुरह बक्रर उसने (जिब्रईल) तो उतारा है ये कलाम तेरे दिल पर अल्लाह के हुक़म से सच्च बतलाता है उस कलाम को जो आगे है और राह दिखाता है और ख़ुशी सुनाता है ईमान वालों को।”

सुरह सज्दा और तहक़ीक़ हमने दी मूसा को किताब पर तो शुब्ह में मत पड़ उसके माअनी हैं और हम ने बनाया उसे हिदायत करने वाली इस्राईल के वास्ते।

सुरह जासिया” और हम ने दी बनी-इस्राईल को किताब और हुक़मत और पैग़म्बरी।

सुरह इमरान” जब यहूदीयों से बहस कर रहे थे तो आपके नबी ने इन से कहा कि "तौरैत को लाओ और जो कुछ कहते हो उस से साबित करो।”

"लाओ तौरत को और तुम पढो अगर सच्चे हो।"

फिर उसी सुरह में यूं आया है "कि तहकीक वो हिदायत अल्लाह की हिदायत है कि दिया जाएगा मुझे (मुहम्मद) मारिंद उसके जो दिया गया है तुमको जिसके मअनी ये हैं कि कुरआन तौरत के मारिंद है।

सुरह अम्बिया" और बतहकीक हमने ज़िक्र यानी तौरत के ज़बूर में लिखा है कि मेरे बंदगान रास्तबाज़ ज़मीन के वारिस होंगे।"

सुरह बनी-इस्राईल और सुरह निसा में और हम ने दिया मूसा को ज़बूर।"

अब हम उन आयतों को जो इंजील में खुदावंद ईसा मसीह की निस्वत पाई जाती हैं नक़ल करते हैं।

सुरह बकर" और दी हमने ईसा मर्यम के बेटे को (इल्हाम) सरीह और ज़ोर दिया उस को रूह पाक से।"

सुरह हदीद" और हमने भेजा नूह और इब्राहिम को और रखी दोनों की औलाद में पैग़म्बरी और किताब। फिर कोई उनमें से राह पर है और बहुतेरे उनमें वे हुक्म हैं और फिर पीछे भेजा ईसा मर्यम के बेटे को और उसको दी इंजील और रखी हमने उसके साथ चलने वालों के दिल में नरमी और महर।"

सुरह निसा मसीह जो है ईसा मर्यम का बेटा रसूल है अल्लाह का और उसका कलाम जो डाल दिया मर्यम की तरफ़ और रूह है उसके यहां की सौ मानो अल्लाह को और उसके रसूलों को।"

सुरह अम्बिया (फ़रिश्ता मर्यम से कहता है) "सिखलाएगा खुदा उस (ईसा) को दानाई और किताब और (उसे मुकर्रर करेगा) रसूल बनी-इस्राईल के लिए (और वो कहेगा) बतहकीक आया हूँ मैं तुम्हारे पास.....ताकि तस्दीक करूँ सब कुछ जो मेरे पेशतर है तौरत में और एक हिस्सा जो मना था तुमको तुम्हारे लिए हलाल ठहराऊँ।"

फिर उसी सुरह में ये है :-

"कह ऐ अहले किताब! तुम नहीं कायम हो किसी चीज़ पर जब तक नहीं मानते हो तौरत और इंजील को और उस पर जो उतारा खुदा ने तुम पर।"

सुरह माइदा और पीछे भेजा हमने उन्हीं के क़दमों पर ईसा और मर्यम के बेटे को सच्च बताता तौरत को जो आगे से थी और उसको दी हमने इंजील जिसमें है हिदायत और रोशनी और सच्ची करते अपनी अगली तौरत को और राह बताती और नसीहत डरने वालों को और चाहीए कि

हुक्म करें इंजील वाले उस पर जो अल्लाह से उतरा और कोई हुक्म ना करे अल्लाह के उतारे पर सौ वही लोग हैं बहकिमा।”

और तुझ पर उतारी हमने किताब तहक्रीक सच्चा करती सब अगली किताबों को और सब पर शामिल।”

इनके सिवा बहुत सी आयतें अख़ज़ की जा सकती हैं लेकिन शायद यही काफ़ी हैं मगर तो भी एक और सुरह इमरान से नक़ल करता हूँ :-

अल्लाह के सिवा किसी की बंदगी नहीं जीता है सब का थामने वाला। उतारी तुझ पर किताब तहक्रीक। साबित करती अगली किताबों को और उतारी थी तौरैत और इंजील इस से पहले लोगों की हिदायत को और उतारा (फुर्कान) इन्साफ़ जो लोग मुन्किर हैं अल्लाह की आयतों से उनको सख़्त अज़ाब है और अल्लाह ज़बरदस्त है बदला देने वाला।

अब ऐ मेरे दोस्तो ग़ौर करने की जगह है कि कुरआन में किताब अहले यहूद और नसारा की कैसी शहादत आई है कि वो किताबें इन्सान की हिदायत के वास्ते आस्मान से नाज़िल हुई हैं ये भी मद्-ए-नज़र रहे कि कुरआन में हुक्म है कि जो कोई शफ़ाअत ईलाही को ना माने तो इस को खुदा तआला जो इंतिक़ाम लेता है होलनाक सज़ा देगा पस क्या इस से ये बात साबित नहीं होती है कि हम सब के लिए इन कुतुब के मुआयना और मुतालआ करने और इस तरह उनकी हिदायत से फ़ायदा उठाने की दावत आई है क्योंकि आप ही के नबी साफ़ फ़रमाते हैं कि सब लोगों के वास्ते इन किताबों में हिदायतें पाई जाती हैं। क्या उनसे दस्त-बरदार रहने या ग़फलत करने में गुनाह नहीं है? क्योंकि फिर यूं वारिद हुआ है कि "जो कोई ईमान नहीं लाता खुदा पर उसके फ़रिशतों पर और उसकी किताबों पर और उस के नबियों पर और उस पिछले दिन पर बतहक्रीक गुमराह हुआ है वो एक वसीअ और ख़तरनाक भूल में है सुरह निसा।”

लेकिन शायद आप फ़रमाएंगे कि हम क्योंकर जानें कि तौरैत और इंजील जो अब तुम हमारे सामने पेश करते हो वही तौरैत और इंजील हैं जिनकी निस्बत हम लोगों के नबी ने कुरआन में शहादत दी है मगर इस बात में मुतलक़ शक़ व शुबहा नहीं है और हमें उम्मीद है कि आइन्दा फ़स्ल में ये बात पाया सबूत को पहुंच जाएगी (और मैं यक़ीन करता हूँ) कि आपसे बग़ैर व तामिल और बे तरफ़दारी मुलाहिज़ा फ़रमाएंगे।

इस बाब में कि वो किताबें जो हमारे पास मौजूद हैं वही किताबें हैं जिन पर कुरआन में शहादत दी गई है

ये किताबें जो हमारे पास मौजूद हैं सच्ची और ग़ैर तहरीफ़ हैं यानी तौरैत ज़बूर और इंजील वही किताबें हैं जिनका ज़िक़्र बार बार कुरआन में आया है कि ये कुतुब ईलाही हैं।

निस्वत सहाइफ़ अहले यहोदां सहीफ़ों को ज़माने क़दीम में वक्रतन-फ़-वक्रतन मुख्तलिफ़ नबियों और अक्लमंदों ने इल्हाम से ज़बान इब्रानी में क़लम-बंद क्या ये सहीफ़े सैकड़ों बरस पेशतर ज़हूर ईसा यानी तव्वुलुद मसीह मौऊद तकमील को पहुंचे पस वो इस तरह ना फ़क़त यरूशलेम व मुल्क कनआन में उनके पास मौजूद थे बल्कि दूर दौर के मुल्कों और सारी रूमी सल्तनत में फैले हुए थे जैसे कि खूदिया लोग मुदत से मुंतशिर थे उनकी तिलावत हमेशा हर जगह इबादत खानों में हुआ करती थी उनका तर्जुमा यही ज़बान यूनानी में हुआ था जिसका ज़िक्र ज़ेल में किया जाएगा।

निस्वत सहाइफ़ नसारा :- उन को पैरौवान ईसा मसीह बाद उनकी वफ़ात व क़याम ज़ब्त तहरीर में लाए यानी आप के नबी के ज़ाहिर होने से पांच सौ बरस पेशतर ईसाईयों ने यहूदीयों के सहीफ़ों को क़लाम-उल्लाह जान कर क़बूल किया और इस तरह अह्दे-अतीक़ व जदीद मिला कर उन की पूरी बाइबल हुई ये उन के घरों और ख़ानदानों और बराबर ब-वक्रत इबादत इन सब मुल्कों के गिरजों में जहां दीन ईसवी फैल गया था पढ़ी जाती थी पस् इस तरह ये नविशते ज़माना-वर-ज़माना आपके नबी के ज़माना तक चले आए लिहाज़ा ये वही अगली किताबें हैं जिनको क़ुरआन में किताब ईलाही क़रार दिया है।

ऐ मेरे दोस्तो ग़ौर करो यह वही किताबें हैं जिनकी क़ुरआन में तस्दीक़ की गई है और जो यहूदीयों और ईसाईयों के पास सातवीं सदी ईसवी में यानी आपके नबी के ज़माना और इस वक्रत में जब क़ुरआन नाज़िल हुआ मुरव्वज थीं।

यहूदी और ईसाई जो इन किताबों के हामिल थे आपके नबी के चारों तरफ़ रहते थे तीन यहूद फ़िर्के बनाम कनिकवा, नधीर, करीटज़ा, मदीना के नज़दीक़ तीन शहर-पनाह दार बस्तियों में रहते थे और कुल मुल्क अरब में बहुत से ईसाई और यहूदी बूद-ओ-बाश रखते थे मसलन इन शहरों में ख़ैबर, यमन और नजरान, फिर जामा अतराफ़ अरब से मदीना में एलची आया करते थे तवारीख़ से साबित है कि शहर नजरान से मुहम्मद साहिब के पास एलची भेजे गए इनमें दो ख़ास शख्स थे यानी वहां का सरदार वक्रत अब्दुल मसीह जो बनी कीनदा में से था और उनका उस्कुफ़ जो बनी हारित में से था जब उन्होंने इस्लाम क़बूल करने से इन्कार किया तो आप लोगों के नबी और उनके दर्मियान गर्मजोशी से बहस हुई जिसका तज़क़िरा क़ुरआन में यूं पाया जाता है :-

सुरह इमरान तहक़ीक़ ईसा की मिसाल अल्लाह के नज़दीक़ जैसे मिसाल आदम की बनाया उस को मिट्टी से फिर कहा उस को हो जाओ वो हो गया हक़ बात है तेरे रब की तरफ़ से फिर तू मत रह शक़ में फिर जो कोई झगड़ा करे तुझसे इस बात में बाद उस के कि पहुंच चुका तुझको इल्म तो तू कह आओ बुलावें हम अपनी बेटी और तुम्हारे बेटे और अपनी औरतें तुम्हारी औरतें और अपनी जान और तुम्हारी जान फिर दुआ करें और लानत डालें अल्लाह के झूटों पर। यही है बयान तहक़ीक़.....फिर अगर क़बूल ना करें तो अल्लाह को मालूम हैं फ़साद करने वाले। तू कह ऐ किताब वालो आओ एक सीधी बात पर हमारे तुम्हारे दर्मियान की कि हम बंदगी ना करें और किसी की सिवाए अल्लाह के।

उसी सुरह में दूसरे मौक़ा पर ये ज़िक्र है कि जब यहूदीयों ने किसी अक़ीदे पर इनसे इख़्तिलाफ़ ज़ाहिर किया और यह दावा किया कि हमारी किताब में इस का सबूत है तो आपके नबी ने इन से कहा कि लाओ यहां अपनी तौरेत और पढो उसे अगर तुम सच्चे हो।”

और फिर उसी सुरह में यूं आया है "क्या उन्हें देखा" तूने इन यहूदीयों को जिनको एक हिस्सा किताब का दिया गया उनसे कहा गया था कि लाओ खुदा की किताब यानी तौरेत ताकि वही फ़ैसला करे उनके दर्मियान पर फिर उनने अपनी पीठ और भाग गए इस से ज़्यादा सबूत इस बात की निस्वत पेश करना मुम्किन है कि अगली किताबें जिनका ज़िक्र आप लोगों के नबी ने बार-बार किया है कि वो खुदा का कलाम है वही अह्द-अतीक़ और जदीद में जो यहूदीयों और ईसाईयों के पास जो कि इन के गिर्द-ओ-नवाह में रहते थे मौजूद थीं।¹

यहां कोई दाग़ उनके सहीफ़ों की सदाक़त के निस्वत नहीं लगाया गया है मगर सिर्फ़ उनका ग़लत हवाला देना लफ़ज़ों का हटाना और ज़बान का मरोड़ना बयान किया गया है ये शिकायत जो कुछ हो सिर्फ़ यहूदीयों के निस्वत की गई है और ईसाईयों की निस्वत कहीं नहीं पाई जाती जो पुराने और नए दोनों अह्दनामे अपनी बाइबल हैं जो उनमें मुरब्बज रखते थे।

आपके नबी ना फ़क़त उन यहूदीयों और ईसाईयों से जो मुल्क अरब में रहते थे वाक़िफ़ थे बल्कि उन से भी (वाक़िफ़ थे) जो आस-पास के मुमल्कतों में पाए जाते थे उन्होंने खुद दोबार सूरया में सफ़र किया था एक-बार बीस (20) बरस के सन में अपने चचा अबू-तालिब के हमराह गए थे और दूसरे बार ख़दीजा के हुक्म से इस से शादी करने के क़बल जब और जगह की आइयों में मुख़्तारकारी करते थे इस तरह उन को बहुत मौक़ा मिला था कि वहां के ईसाईयों को देखें और उनकी किताबों से जो उन के दर्मियान गिरजों और ख़ानिकाओं में पढ़ी जाती थीं वाक़िफ़ हों।

उनको बज़ात-ए-ख़ुद इन किताबों की बाबत दर्याफ़्त करने की ख़्वाहिश थी (जिसका ज़िक्र) सुरह हदीद में पाया जाता है।

मक्के के कुरैश लोगों से सताए जाने के बाइस सौ मुसलमान से ज़्यादा मर्द औरत और बच्चे सने हिज़्री से पाँच छः बरस पहले हब्श के मसीही सल्तनत में बादशाह नजाशी (नीगस के पास पनाह लेने को भाग गए ये मुल्क बहर-ए-कुल्जुम के इस पर वाक़ेअ है यहां वो कई बरस तक हिज़्रत के बाद रहे और सच्च है कि बाअज़ उन में से इस अक़्वल ज़माने में हब्श की कलीसिया में शामिल भी हो गए और इस तरह उन्होंने ज़रूर बाइबल से ख़ौफ़ वाक़फ़ीयत हासिल की ये भी जानने के लायक़ है कि जब जिलावतन अपने मुल्क में वापिस आने लगे तो आपके नबी ने

¹नोट- मैं यहां सुरह बकरा, निसा, माइदा और इमरान के आयतों का हवाला देता हूँ जिनमें मक्का के यहूदीयों के निस्वत जब वो आप लोगों के नबी से बहस करते थे लिखा है कि वो ग़लत हवाले पेश करते हैं ज़बान मरोड़ कर पढ़ते हैं और लफ़ज़ों को उन के जगह से हटा कर पढ़ते हैं ताकि तुम जानो कि वो किताब ही में से है।

नजाशी बादशाह को पैगाम भेजा कि अबू सुफ़ियान की बेटी उम्म हबीबा की शादी का इंतज़ाम उनके साथ किया जाये और जब वो औरों के साथ मदीना में वारिद हुई तो वो फ़ौरन उसे अपने निकाह में लाए।

आपके नबी और आस-पास की मुमलकतों के दर्मियान बहुत कुछ ख़त-ओ-किताबत होती रही सन सात हिज़्री में उन्होंने गर्द नवाह के सब बड़े हाकिमों के पास एलची भेजे। मसलन कैसर हरकलीस और ग़स्सान के शहज़ादे हारित के पास फ़ारस और हब्श के बादशाहों मिस्र के हाकिम और यमामा के सरदार के पास और उन में दावत की कि इस्लाम क़बूल करें हालाँकि किसी ने इस दावत को क़बूल ना किया मगर बाअज़ ने इन एलचियों को इन मुल्कों की किताबों और तर्ज़ इबादत मुरव्वजा से वाकिफ़ होने का मौक़ा मिला।

मासिवा इसके आपके नबी की हरम में यहूदी और ईसाई मज़हब की औरतें उन की इज़दवाज मौजूद थीं उसका ज़िक्र हो चुका है कि बनी करतीज़ा एक यहूदी फ़िर्का था जो मदीना शहर के मुत्तसिल रहता था कुरैशियों ने एक बड़ी फौज़ लेकर सन पाँच हिज़्री में शहर मदीना पर हमला किया उस वक़्त अगरचे इस यहूदी फ़िर्के को दुश्मन ना समझा लेकिन इस की दोस्ती का इतना शक़ किया कि जब ग़नीम पसपा हुए तो उन्होंने उनके मर्दों में से जो शुमार में आठ या नौ सौ थे थोड़ों को जिन्होंने इस्लाम क़बूल किया छोड़ कर बाक़ीयों को तहतेग़ किया और उनकी औरतों को और बच्चों को लौंडी गुलाम बनाया एक ख़ूबसूरत यहूदन बनाम रिहाना बगरत हरम में दाख़िल की गई और चूँकि उसने इस्लाम को क़बूल ना किया और अपने मज़हब पर कायम रही नबी उस को अपने निकाह में ना लाए पर यूँही घर में डाल लिया।

फिर दो बरस के बाद मिस्र के हाकिम मक़क़स ने जब इस्लाम क़बूल करने की निस्वत दावत पाई जिसका ज़िक्र पहले हो चुका है तो इस्लाम को क़बूल ना किया मगर अज़राह लुत्फ़ ये जवाब भेजा कि तेरा एलची साथ इज़ज़त के क़बूल किया गया और मैं उसके हाथ दो बहनों को जिनकी क़िबती लोगों के दर्मियान बड़ी क़दर है और एक चौड़ा कपड़ा और एक ख़च्चर तेरे सवारी के लिए भेजता हूँ उम्मीद है कि तू क़बूल करेगा ये ख़च्चर सफ़ैद रंग का था जो मुल्क अरब में नायाब था ये हमेशा आप लोगों के नबी की सवारी में रहा लेकिन ख़च्चर से कहीं ज़्यादा उन्होंने मर्यम को जो इन दो क़िबती लड़कियों में ज़्यादा दिल-फ़रेब थी पसंद किया उसको फ़ौरन अपने निकाह में लाए और उससे एक बेटा पैदा हुआ जो हालत तफ़ूलियत में राही मुल्क-ए-बक्रा हुआ फिर उस ही साल जब ख़ैबर पर फ़ल्ह पाई तो नबी ने सफ़िया यहूदन से निकाह किया जिसका शौहर बनाम कनाना उस मग़लूब फ़िर्के का सरदार था और उस जंग में काम आ चुका था।

पस जब यहूदी और ईसाई अज़वाज उनके हरम में मौजूद थीं तो आप लोगों के नबी को बख़ूबी मालूम था कि वो किताबें जो उनके के पास मौजूद थीं कौन कौन और कैसी थीं और इसी वजह से उन किताबों की क़दर और मंजिलत का ज़िक्र बार-बार कुरआन में आया है।

ये बात याद रहे कि नबी की वफ़ात के दो बरस बाद मुसलमान फ़ौजें अरब से निकल कर सरिया और आस-पास के मुल्कों में फैल गई और उन्होंने यहूदीयों और ईसाईयों की गिरोह की गिरोह को जबरन दाखिल इस्लाम किया ये मुल्क गिरजों और खानकाहों और यहूदीयों के इबादत खानों से मामूर था पस सभों ने मसीही क्रौम की किताबों को ज़रूर देखा और जाना होगा ये वही किताबें हैं जो उस वक़्त तमाम दुनिया में जारी थीं और जिन पर आपके नबी यानी मुहम्मद साहिब कुरआन में शहादत देते हैं।

वह शख्स जो आपके नबी के हालात-ए-ज़िंदगी से वाकिफ़ है और बहुत कुछ लिख सकता है लेकिन जो कुछ इस बात के सबूत में मैंने कहा इतना ही काफ़ी है कि बाइबल जो सातवीं सदी में अश्या-ए-यूरोप और अफ़्रीका के बीच यहूदीयों और ईसाईयों के पास मौजूद थी वही खुदा की किताब है जो पुश्त दर पुश्त गुज़रती हुई आप लोगों के नबी के ज़माना तक पहुंची और इसी तरह हमारे वक़्त तक आई है मुम्किन नहीं कि ये कोई और किताब हो मगर हम आगे बढ़कर उसका और सबूत देंगे कि ये शुरू से हमारे पास बिला-तहरीफ़ चली आती है।

इस सबूत में पुराने और नए अहदनामे के सहीफ़े जो असल में यहूदीयों और ईसाईयों को इल्हाम से मिले बिला-तहरीफ़ हमारे पास मौजूद हैं

ये तस्लीम करने के बाद कि अहदे-अतीक़ व जदीद के सहीफ़े वही हैं जिन पर आप लोगों के नबी ने कुरआन में शहादत दी है ये जान लेना आपके पसंद खातिर होगा कि और शहादतें भी मिलती हैं जिनसे साबित होता है कि ये किताबें असल और हकीक़त में वही हैं जो शुरू में यहूदीयों और ईसाईयों को दी गईं पस हम बतौर इख़्तिसार उनके गुज़शता तवारीख़ और सदाक़त की शहादतों का तज़क़िरा करेंगे।

अव्वल तवारीख़ नुज़ूल- ईसा के सऊद के बाद मसीही दीन की बशारत यहूदीयों और ग़ैर क्रौमों के दर्मियान की गई और थोड़े ही अरसा में सारी कमरो-रदम में फैल गई मसीही जमातें और कलीसियाएं हर कहीं कायम हो गईं।²

² नोट: इसका बयान रसूलों के आमाल में जो नए अहदनामे का एक सहीफ़ा है पाया जाता है उसमें पन्टिकोस्ट के दिन रूहल-क़दूस के नुज़ूल का बयान पढ़े और पतरस रसूल का दर्स जो उसने यहूदीयों को बाब दोम में और ग़ैर क्रौमों को बाब दहम में दिया है और फिर पौलुस और दीगर रसूलों की तहरीर मुलाहिज़ा कीजिए।

और इस तरह उन किताबों की जो मसीही ज़िंदगी और ईमान के तालीम से पुर हैं दोनों खल्वती और आम इबादत के लिए बहुत ज़रूरत है पस इस लिए तैयार की गई और इस सारी सरज़मीन में फैल गए इसमें ना फ़क़त इंजील और दीगर मसीही किताबें और खुतूत शामिल हैं बल्कि यहूदीयों के वो सहीफ़े भी जो ज़माना दराज़ से यहूदीयों के इबादत खानों में पढ़े जाते थे और इस तरह ज़हूर ईसा के लिए दुनिया तैयार की गई लिहाज़ा दोनों पुराने और नए अहद नामे ईसाईयों के नज़्दीक मुसल्लम कलाम-ए-खुदा माने जाते हैं इस तरह बाइबल मशरिफ़ और मग़रिब में असली ज़बान में फैल गई और सब क़ौमों के दर्मियान क़ायम हो गई और यूं सारी दुनिया में मुरव्वज और मुस्तअमल होने की वजह से पुश्त-दर-पुश्त हम तक पहुंची जिस तरह कुरआन आप लोगों के नबी की वफ़ात से अब तक वही ग़ैर मुतबदल किताब पाई जाती है।

इसका भी ज़िक्र करना ज़रूर है कि दीन ईसवी की आगाज़ से करीब तीन सदियों तक रूमी बुतपरस्त शाहंशाह हुक्मराँ रहे मगर असल मतन में इन की तरफ़ से किसी तरह की दस्त-अंदाज़ी और तब्दीली वाक़े ना हुई अगरचे पैरौऑन ईसा ने अक्सर जुल्म सहे और शहीद हुए लेकिन उन की किताब को जो सारी दुनिया में फैली हुई थी नेस्त व नाबूद करने की कोशिश करना बेसूद व ग़ैर-मुम्किन था।

दोवेम बाइबल के तर्जुमे

एक ख़ास और भारी सबूत हमारे किताब की मुहफ़ाज़त का ये है कि शुरू ज़माने से उसका तर्जुमा इन मुल्कों के ज़बानों में हो गया था जिनमें दीन ईसवी रिवाज पा चुका था जहां लोग खुद यूनानी या इब्रानी ज़बान बोलते थे वहां तर्जुमें की ज़रूरत ना थी लेकिन और सब मुल्कों में वहीं की ज़बानों में तर्जुमा बाइबल का कर दिया गया था क्योंकि ईसाईयों की ये आदत कभी नहीं रही है कि वो अपनी ख़ानगी और आम इबादतों में असल ज़बान की क़ैद रखें जिसमें वो किताबें लिखी गईं जैसा कि मेरे दोस्तों आप लोगों की कैफ़ीयत कुरआन की निस्बत है बाइबल हर कहीं असल ज़बानों यानी इब्रानी और यूनानी में पाई जाती है और उसे वो लोग पढ़ते हैं जो उन ज़बानों से वाक़िफ़ हैं लेकिन मसीही हमेशा ज़्यादा-तर बाइबल का तर्जुमा उनके ख़ास ख़ास ज़बानों में होता आया है खल्वत और घर और गिरजों में पढ़ते थे इस तरह शुरू ज़माना से पाक कलाम का तर्जुमा लातीनी, क्रिबती, सुर्यानी, अर्मनी, और हब्शी ज़बानों में किया गया और अभी तक मौजूद है और वो लोग हमेशा उन्हें अपने अपने ज़बानों में पढ़ते आए हैं पुराने अहदनामे का सीप्टोवाज्जट तर्जुमा का ज़िक्र हम कर चुके हैं इस को यहूदीयों ने ज़बान यूनानी में सिकंदरीया शहर में आप लोगों के नबी से सदहा बरस पेशतर किया था।

ऐ नाज़रीन ये तर्जुमा अब मौजूद हैं और आप खूद या आपके आलिम उन्हें जांच सकते हैं इस तरह एक बड़ा सबूत इन सहीफ़ों के बेतहरीफ़ होने का तर्जुमों के मुकाबला करने से मिलता है क्योंकि ये तर्जुमा हालाँकि मुतफ़र्रिक़ ज़मानों और ज़बानों में किए गए तो भी उस असल के मुताबिक़ हैं पस असल में तब्दीली वाक़े नहीं हुई जैसा कि वो उस क़दीम ज़माने में था वैसा ही अब है क्योंकि सारे तर्जुमे एक ही असल मतन से किए गए और उसी के मुताबिक़ पाए जाते हैं अब ऐ दोस्तो मुझे बड़ी तमन्ना है कि आप इस ख़ास बात पर ग़ौर करेंगे कि इब्रानी और यूनानी ज़बानों में असल और यही तर्जुमा जो आपके नबी के वक़्त से मुद्दत दराज़ पेशतर किए गए दोनों अरबिस्तान सरिया हब्श और दीगर मुल्कों के ईसाईयों और यहूदीयों के पास मौजूद थे बल्कि सच्च तो यूं है कि कुल क़ौमों के पास जो नबी के गर्दवपीश रहती थीं पाए जाते थे पस ये वही किताबें हैं जो असली या तर्जुमा के हालत में रोज़मर्रा मुस्तक़िल थीं और जिन पर आप लोगों के नबी ने ये गवाही दी है कि वो खुदा का कलाम है जो कुरआन के पेशतर नाज़िल हुआ।

पाक कलाम के पुराने नुस्खे आप वो क़लमी नुस्खे आज देख सकते हैं जो आपके नबी के ज़माने से क़ब्ल नक़ल किए गए थे ऐसे नुस्खे इंजील के बहुत पाए जाते हैं मगर यहां पर उनकी निस्वत तहरीर करने की कुछ ज़रूरत नहीं है क्योंकि हम बाइबल के बाअज़ मुसल्लम नुस्खों का बयान किए देते हैं जो आपके ज़्यादा पसंद ख़ातिर होगा शहर रुम में वटीकन नुस्खा और सेंट पीटज़बर्ग में सटीक नुस्खा (वो नुस्खा जो सेंट पीटर्सबर्ग में मौजूद है शहनशाह कसटानटाईन के हुक़म से कुस्तुनतुनिया के एक गिरजाघर के लिए नक़ल किया गया था और वहां एक मुद्दत तक रहा था अब मौजूद है) ये दोनों चौथी सदी के शुरू हिस्से में यानी आपके नबी की विलादत से क़रीब तीन सो बरस पेशतर नक़ल किए गए थे फिर शहर पार्स में अफ़ाईमी नुस्खा और शहर लंदन के इंग्लिस्तान की अजाइब ख़ाने में सिकंदरिया नुस्खा अब तक मौजूद हैं ये दोनों पांचवीं सदी के लिखे हुए हैं और किए एक छट्टी सदी के लिखे हुए यूरोप और तुर्किस्तान में पाए जाते हैं।

ये सब जिल्दें मौजूद हैं जिसका जी चाहे आज देख ले उनसे इस बात का पूरा सबूत मिलता है कि ये सब के सब आपके नबी के ज़माने से पेशतर के लिखे हुए हुए हैं पस साबित होता है कि जो किताबें हम आपके सामने पेश करते हैं ज़रूर बिल ज़रूर वही नविशते हैं जिन पर उन्होंने बारहा शहादत दी कि वो फ़िल-हक़ीक़त खुदा का कलाम है।

अगर ज़्यादा सबूत की ज़रूरत है तो इस सच्चाई का एक और बड़ा सबूत ये है कि पुराने और नए अहद नामों के कुल हिस्सों से उन मुसन्निफ़ों ने जो इस्लाम के आगाज़ से पहले हुई अपने किताबों में इक़तिबास किया है ऐसे बहुत मुसन्निफ़ गुज़रे हैं जिनकी तस्वीफ़ें अब तक पाई जाती हैं इन किताबों में इन मुसन्निफ़ों ने बाइबल मुक़द्दस से इक़तिबास इस ग़रज़ से मुतवातिर किया है कि अपनी राएं दलाईल व नसीहतें बह सबूत मुनक़शिफ़ करें। पस अगर दूर ना जाये तो दूसरी और तीसरी सदी में हम मसुनफ़ान टरटोलीन, आईरीनीस, ओरीजन, और दीगर मुसन्निफ़ों की किताबों में तौरेत और ज़बूर और इंजील के बहुत हवाले पाते हैं और चौथी सदी में ग्रेगरी बैसल एंब्रोज़, जेरोम, अगसटीन और बहुत और मुसन्निफ़ों के ये हवाला जो आपके नबी के ज़माना से बहुत पेशतर

इन किताबों से इक़्तिबास किये गये। इन किताबों से जो हमारे पास हैं बिल्कुल मिलते। और इस तरह उनके हमशबीया होने से पूरा सबूत पहुंचता है कि ये किताबें वही हैं जिन पर कुरआन शहादत देता है।

यह बात मुश्किल नहीं है कि खुद आप या आपके आलिम फ़ाज़िल अहबाब जो दुनिया की सैर करते हैं इन जुदागाना शहादतों की जो मैंने पेश कीं तस्दीक़ कर लें। ऐसी बातों का कहना जो जाहिल हमारी किताब मुक़द्दस की निस्बत कहते हैं ऐसी नादानी की बात है। जैसे कोई शख्स कुरआन की सेहत पर शक करे आप इस से कहें कि अच्छा कि अगर तुमको शक व शुब्हा है तो तुम शहर दमिश्क़ के मस्जिद अक़सा में खुद ख़लीफ़ा उस्मान के हाथ के नक़ल किये हुए नुस्खा क्यों ना देख लो या तुम इस शख्स से कहोगे कि ज़मक़शारी और दीगर मुसन्निफ़ों की तफ़ासीर को देखिये जिनमें तुम्हारी किताब की हर एक आयत वैसे ही पाई जाती है जैसे कुरआन में मौजूद है। या तुम उसके सामने अपने नबी की ज़िंदगी की तवारीख़ें जो इब्ने इस्हाक़ और इब्ने हिशाम और मैदानी ने तस्लीफ़ की हैं पेश करोगे। या वो तवारीख़ें उसके सामने पेश करोगे जिनको तबरी और मकरीज़ी और इब्ने अतहर ने लिखा है जिनमें कुरआन की सदहा आयतें इक़्तिबास की हुई नज़र से गुज़रेंगी। और यूं वो शक करने वाला उलमा के नज़दीक़ मौरिद तम्सख़र और मुज़हका ठहरेगा। पस ऐसा ही हाल हमारी बाइबल मुक़द्दस का है इस की सदाक़त की शहादत के निस्बत मज़ीद सबूत ये है कि इसके क़दीम तर्जुमा भी मौजूद हैं जो अहले इस्लाम के पास कुरआन की शहादत में नहीं पाए जाते।³

बाइबल की असलीयत के निस्बत क्योंकर शक व शुब्हा हो सकता है। अगर कोई शख्स ज़रा तकलीफ़ उठाकर तहक़ीक़ करे तो उसे साफ़ मालूम हो जाएगा। कि ऐसा शक व शुब्हा करना महज़ बे-सबात व ग़लत है।

ऐ मेरे दोस्तो क्या मुनासिब नहीं कि आप ज़रा तकलीफ़ उठाकर उन शहादतों को जांचें जिससे ये बात साबित होती है कि ये तौरैत व इंजील जिनके मुतालआ करने की आपको दावत दी जाती है वही तौरैत इंजील हैं जो शुरू ज़माना इस्लाम में मौजूद थीं क्योंकि आप इस हक़ीक़त को वागुज़ाशत नहीं कर सकते कि आपके नबी ने कुरआन में बड़ी ताकीद के साथ अहले यहूद और अहले नसारा की निस्बत फ़रमाया है कि अगर तौरैत व इंजील के हुक़मों पर जो उनके खुदावंद ने नाज़िल कीं क़ायम ना रहें या अमल ना करें तो उनकी कोई बुनियाद नहीं है।

³ **नोट** कहते हैं कि ख़लीफ़ा उस्मान ने अपने हाथ से तीन नुस्खा कुरआन के लिखे थे जिनमें से एक नुस्खा दमिश्क़ के जामा मस्जिद में रखा हुआ था। वो आग से तल्फ़ हुआ। और दीगर नुस्खाजात जो ख़लीफ़ा उस्मान के हुक़म से लिखे गये वोह मदीना व काहिरा और दीगर शहरों में रख दिए गये और वो नुस्खा जिस पर खून लगा हुआ है शहीद होते वक़्त उसके हाथ में था बस्रा की मस्जिद में रखा है। क्या ईसाईयों और यहूदीयों के क़दीम नुस्खे उन से कमक़दर हैं?

पस जबकि आपके नबी साहिब ने इंजील के हुक्मों पर अमल करना ही हमारी रुहानी ज़िंदगी व सलामती के लिए एक अम्र ज़रूरी व लाज़मी ठहराया तो हम ईसाई ताज्जुब करते हैं कि आप इन पाक सहीफ़ों की ज़्यादा क़दर-ओ-मन्ज़िलत क्यों नहीं करते। हमारी दिली आरजू ये है कि आप उनकी जांच और तिलावत करेंगे क्योंकि जब आपके नबी ने उनकी तारीफ़ व तौसीफ़ की है कि बग़ैर उनकी हमारी कोई बुनियाद नहीं तो ज़रूर बिल-ज़रूर इस इल्हामी कलाम में आप भी बहुत कुछ पाएंगे जिसे आप पसंद करेंगे और फ़ायदा खातिर-ख़्वाह उठाएंगे कि आपकी रुहानी ज़िंदगी में बड़ी तरक्की होगी। ज़रा इस अम्र पर लिहाज़ कीजिए कि कुरआन में इन किताबों की तारीफ़ में कैसे हैरत-अफ़ज़ा व पुर-माअनी अल्फ़ाज़ अल्काब आये हैं।

असल ज़बानी अरबी किताब-उल्लाह ही	तर्ज़मा किताब अल्लाह की
<p>كِتَابُ اللَّهِ بَصَائِرٌ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ التَّوْرَةُ وَبُؤْدَى وَمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ وهدى وذكرى والالباب ضيا وذكر للمتقين</p>	<ol style="list-style-type: none"> 1. किताब अल्लाह की 2. इन्सान के वास्ते रोशनी और हिदायत और रहमत किताब नूर और हिदायत और नसीहतें परहेज़गारों के लिए 3. हिदायत और तंबीह साहिब और अक्ल व फ़हम के लिए 4. रोशनी और तंबीह मोमिनीन के लिए

जबकि कुरआन से ऐसी क़वी शहादत तौरत, ज़बूर व इंजील के निस्बत दस्तयाब हो तो ऐ मेरे दोस्तो अब तुम्हें शक करने की जगह अब कहाँ रही ज़रा उन अल्काबों पर जो कुरआन में पाक नविशतों के निस्बत आई हैं ज़रा ग़ौर कीजिए।

इक़तबासात तौरात व ज़बूर व इंजील से

अब हम अपने दोस्तों के लिए चंद आयात तौरात व ज़बूर और इंजील से इक़ितबास करके लिखते हैं ताकि उनको इन सहीफ़ों की ख़ूबी व फ़ज़ीलत मालूम हो जाए और अगर ये इक़ितबास मुतालआ करने पर उनको पसंद आए तो फिर इस रिसाला के ज़मीमा पर नज़र डालें ताकि उनको कलाम-ऐ-ख़ुदा से पूरी पूरी आगाही हो जाए।

शुरू में दो तीन मुक़ाम तौरात व ज़बूर से नक़ल करता हूँ जिन को अम्बिया व मुसन्निफ़ ज़बूर ने खुदावंद मसीह की पैदाइश से सदहा साल क़ब्ल कलमबंद किया था। देखो कलाम ज़ेल कितना ख़ूबसूरत है। ज़बूर 63:1-8- ऐ खुदा तू मेरा खुदा है मैं तड़के तुझको ढूँढ़ूँगा मेरी जान तेरी प्यासी है और जिस्म खुशक और धूप की जली हुई ज़मीन में। जहां पानी नहीं पड़ा मुश्ताक़ है ताकि तेरी कुदरत और तेरी हशमत को देखे। जैसा कि मैंने बैत कुददुस में देखा है। इसलिए कि तेरी मेहरबानी ज़िंदगी से बेहतर है। तो मेरे होंट तेरी सताइश करते रहेंगे। इसी तरह कि जब तक कि मैं जीता हूँ तुझको मुबारक कहा करूँगा और तेरा नाम ले लेके अपने हाथ उठाऊँगा। मेरी जान यूँ सैर होगी गोया कि गूदा और चर्बी और मेरा मुँह खुशी करते हुए होंटों से तेरी सताइश करेगा। जबकि मैं तुझे अपने बिस्तर पर याद करता हूँ। और रात के पहर दिन में तेरा ध्यान करता हूँ। इसलिए कि तू मेरा चारा हुआ पस मैं तेरे पैरों की छांवों तले खुशी मनाऊँगा। मेरी जान तेरे पीछे लगी है तेरा दाहिना हाथ मुझको थामता है।

कलाम ज़ेल यसअयाह नबी की किताब से हुआ है

बाब 2:1-3 :- और उस दिन तू कहेगा ऐ खुदावंद में तेरी सताइश करूँगा कि अगरचे तू मुझसे नाखुश था पर तेरा गुस्सा उतर गया और तूने मुझे तसल्ली दी। देखो खुदा मेरी नजात है मैं इस पर तवक्कुल करूँगा और ना डरूँगा कि याह यहोवाह मेरा बूता और मेरा असरोद है और वो मेरी नजात हुआ है। सो तुम खुश होके नजात के चश्मों से पानी भरोगे ।

और यह कलाम हबक्कुक़ नबी की किताब से है बाब 3:17-19 :-

हरचंद इंजीर का दरख़्त ना फूले और ताकों में मेवा ना लगें और जैतून के फल जाते रहें और खेतों में कुछ अनाज पैदा ना हो और गल्ला भेड़ साले में काट डाला जाये और गाय बैल थानों में ना रहें इस पर भी मैं खुदावंद की याद में खुशी करूँगा मैं अपनी नजात के खुदा के सबब खुशवक़त हूँगा।

अब ऐ अज़ीज़ दोस्तो मेरी दरख्वास्त आपसे ये है कि ज़ेल की चंद आयतें हर दो इंजील शरीफ़ से मैं इक़तबास करता हूँ नज़र डालें।

खुदावंद मसीह ने फ़रमाया मुक़द्दस मत्ती की इंजील बाब 11:25-30 :-

उस वक़्त येसु कहने लगा ऐ बाप आस्मान और ज़मीन के मालिक मैं आपकी हम्द करता हूँ कि आपने ये बातें दानाओं और अक़्लमंदों से छुपाया और बच्चों पर ज़ाहिर किया। हाँ ऐ बाप कि यूँ ही तुझे पसंद आया। मेरे बाप की तरफ़ से सब कुछ मुझे सौंपा गया और कोई बेटे को नहीं जानता मगर बाप के और कोई बाप को नहीं जानता मगर बेटा और उसके जिस पर बेटा इसे ज़ाहिर किया चाहता है। ऐ तुम लोगों जो थके और बड़े बोझ से दबे हो सब मेरे पास आओ कि मैं तुम्हे आराम

दूंगा। मेरा जुआ अपने ऊपर उठालो और मुझसे सीखो। क्योंकि मैं हलीम हूँ और दिल का फ़रोतन तो तुम्हारी जानें आराम पाएँगी। क्योंकि मेरा जुआ मुलाइम है और मेरा बोझ हल्का।

खुदावंद मसीह की तालीम मुक़द्दस मत्ती बाब 7:21 ना हर एक जो मुझे खुदावंद खुदावंद कहता है आस्मान की बादशाहत में शामिल होगा मगर वही जो मेरे बाप की जो आस्मान पर है इस की मर्ज़ी पर चलता है।

फिर मुक़द्दस मरकुस बाब 3:31-35 तक : उस वक़्त उसके भाई और उसकी माँ आई और बाहर खड़े रह कर उसे बुलवा भेजा। और जमात उसके आसपास बैठी थी और उन्होंने उससे कहा देख तेरी माँ और तेरे भाई बाहर तुझे तलब करते हैं। उसने उन्हें जवाब दिया कौन है मेरी माँ या मेरे भाई? और उन पर जो उसके आसपास बैठे थे नज़र करके कहा देखो मेरी माँ और मेरे भाई। इसलिए कि जो कोई खुदा कि मर्ज़ी पर चलता है मेरा भाई और मेरी बहन और मेरी माँ वही हैं।

यहया इब्ने ज़करिया की शहादत देखो मुक़द्दस युहन्ना बाब 1: आयत 29 :-

दूसरे दिन युहन्ना ने खुदावंद येसु मसीह को अपनी तरफ़ आते देखकर कहा देखो ये खुदा का बर्षा जो जहान का गुनाह उठा ले जाता है।⁴

मुक़द्दस युहन्ना बाब 1:32-34 :-

और युहन्ना ने ये कहा कि मैंने रूह को कबूतर की तरह आस्मान से उतरते देखा और वो उस पर ठहर गया। और मैं तो उसे पहचानता ना था मगर जिसने मुझे पानी से इस्तिबाग़ देने को भेजा उसी ने मुझसे कहा कि जिस पर तुम रूह को उतरते और ठहरते देखो वही रूहुल-कुद्दुस से बप्तिस्मा देने वाला है। सो मैंने देखा और गवाही दी है कि ये खुदा का बेटा है।

मत्ती बाब 3:17 :-

और देखो आस्मान से ये आवाज़ आई कि ये मेरा प्यारा बेटा है जिससे मैं खुश हूँ।

ज़ेल में मसीही दीन का खुलासा दर्ज है जो मुक़द्दस पौलुस ने तीतस बाब 2:11-14 ख़त में तहरीर फ़रमाया है :-

⁴ **नोट**- येसु खुदा का बर्षा कहलाता है जिससे ये मुराद है कि जिस तरह ईद फसह में साल साल बर्षा की क़र्बानी इस लिए होती थी कि लोगों के गुनाह माफ़ किये जाएं पस येसु बर्षा ख़ुदा हो कर सलीब पर मस्लूब हुआ कि हमारे गुनाह माफ़ किये जाएं हज़रत यहया इब्ने ज़करिया ये वही शख्स है जिसका ज़िक्र क़ुरआन में पाया जाता है। कि बूढापे में येही बेटा ज़करिया के पैदा हुआ जैसा कि ख़ुदा ने वाअदा किया था सरह आल-ऐ-इमरान को देखो। यहया के क़ल्ल करने का इन दोनों गुनाहों में से एक गुनाह है जो क़ुरआन में सुरह बनी-इस्त्राईल में मज़कूर है जो बनी-इस्त्राईल से सरज़द हुआ।

क्योंकि खुदा का फ़ज़ल की जो सारे आदमीयों के लिए नजात-बख़्श है ज़ाहिर हुवा है। और हमें सिखलाता है कि बेदीनी और दुनिया कि बुरी ख़्वाहिशों से इन्कार करके इस मौजूदा जहान में होशियारी और रास्ती दीन-दारी से ज़िंदगी गुज़ारें। और इस मुबारक उम्मीद यानी अपने बुजुर्ग़ खुदा और अपने बचाने वाले खुदावंद येसु मसीह के ज़हूर जलील का इन्तिज़ार करें जिसने आपको हमारे बदले दिया। ताकि वह हमें सब तरह की बदकारियों से छोड़ दे और एक ख़ास उम्मत को जो नेकोकारी में सरगर्म होवे अपने लिए पाक करे।

और मुक़द्दस पतरस का क़ौल ये है पहला पतरस बाब 1:3-5 :-

हमारे खुदावंद येसु मसीह का खुदा और बाप मुबारक हो जिसने हमको अपनी बड़ी रहमत से येसु मसीह के मुर्दों में से जी उठने के बाइस ज़िंदा उम्मीद के लिए सरे नौव पैदा किया ताकि हम वह बेज़वाल और ना-आलूदा और ग़ैर-फ़ानी मीरास जो आस्मान पर तुम्हारे लिए रखी गई पाएं । जो खुदा के फ़ज़ल से ईमान के वसीले उस निजात तक जो आखीर वक़्त में जाहीर होने को तैयार है महफूज़ कि हुई है।

और रसूल मक़बूल युहन्ना पहला ख़त बाब 2:1-5

में यूं मर्कूम है

ऐ मेरे बच्चो ! मैं ये बातें तुम्हें लिखता हूँ कि तुम गुनाह ना करो और अगर कोई गुनाह करे तो येसु मसीह जो सादिक़ है बाप के पास हमारा शफ़ीअ है और वह हमारे गुनाहों का कफ़फ़ारा है फ़क़त हमारे गुनाहों का नहीं बल्कि तमाम दुनिया के गुनाहों का यही अगर हम और उसके हुक्मों पर अमल करें तो हम इससे जानते हैं कि हमने उसको जाना वह जो कहता है कि मैं उसे जानता हूँ और हुक्मों पर अमल नहीं करता सो झुटा है और सच्चाई उसमें नहीं।

मुक़द्दस याक़ूब बाब 1:17 व 27 में

यूं फ़रमाते हैं

हर अच्छी बख़शिश और हर कामिल इनाम ऊपर से है और नूरों के बानी की तरफ़ से उतरता है जिसमें बदलने मबर जाने का साया नहीं । वह दीनदारी जो खुदा और बाप के आगे पाक और बेएब है सो यही है कि यतीमों और बेवाओं कि मुसीबत के वक़्त उनकी ख़बरगीरी करना और आपको दुनिया से बेदाग़ रखना ।

अब ऐ दोस्तों आखरी दो आयतें मुक़द्दस यहूदाह के ख़त से भी पेश करता हूँ उनको मुलाहिज़ा फरमाएं :-

पहला बाब 24 व 25 :-

अब उसके लिए जो तुमको गिरने से बचा सकता है और अपने जलाल के हुजूर कामिल खुशी से तुम्हे बेएब खड़ा कर सकता है जो खुदाए वाहीद हकीम और हमारा बचाने वाला, जलाल और हशमत और कुदरत और इख्तियारात से अबद तक होवे I अमीन

इख़िताम

ऐ मेरे अज़ीज़ो दोस्तो मैंने चंद इक़तबासात तौरात व ज़बूर और इंजील से बर्दीग़र्ज़ पेश किये हैं कि आप उनका मुतालआ करें जिससे आपको इन किताबों की तालीम से वाक़फ़ीयत हासिल हो। ये मुबारक किताबें आपके मुलाहिज़ा के लिए मौजूद हैं उनका मुतालआ आप जिस वक़्त चाहें कर सकते हैं लेकिन मैंने इसी रिसाले के ज़मीमा में और मुक़ामात पाक नविशतों से इक़तबास किये हैं कि आप उनका मुतालआ करें ताकि और भी ज़्यादा आगाही आपको कलाम ईलाही की तालीम से हो जाए।

ऐ अज़ीज़ो आप को ये बात ख़ूब याद रखनी मुनासिब है। ये सारी तालीम इस किताब की है जिस पर कुरआन साफ़ साफ़ शहादत देता है और ये कहता है कि ये तमाम व कमाल कलाम-ऐ-ईलाही है।

जिसका लक़ब किताब-ऐ-मुनीर, और इन्सानों के लिए हिदायात और मुत्तक़ियों के लिए वाअज़ व नसहीत व हिदायत है। वो लोग जो खुदा के इल्हाम व मुकाशफ़ा से शाफ़िल हैं और यह कहते हैं कि हम कलाम-ऐ-ईलाही के एक हिस्सा पर ईमान लाए और एक हिस्सा से मुन्किर हैं और दोनों के दर्मियान की राह पर चलते हैं ऐसों की निस्बत आप के नबी का ये क़ौल है कि वो ख़तरनाक और होलनाक हालत में गिरफ़्तार हैं। मगर वो लोग जो खुदा और उसके रसूलों पर ईमान लाए हैं और उन के दर्मियान कुछ फ़र्क़ नहीं करते उन को यक़ीनन हज़ अज़ अज़ीम देंगे।

खुदा रहीम व करीम और बड़ा बख़्शने वाला है। सुरह निसा ऐ अज़ीज़ो दोस्तो क्या आप अपने पर ज़र्रा सी तक्लीफ़ उठाकर उन पाक नविशतों का खुद मुतालआ ना करेंगे और उनकी इल्हामी तालीम से मुस्तफ़ीद व मुस्तफ़ैज़ ना होंगे?

आपने कुरआन-ऐ-मजीद में ये बयान ईसा इब्ने मरियम की निस्बत ज़रूर पढा होगा जिसको मैं पहले इक़तबास कर चुका हूँ कि ईसा रसूलुल्लाह व रूहुल्लाह है। वो कलिमतुल्लाह है जिसको मर्यम बाकरा की तरफ़ मंसूब किया तुमने कुरआन में उसके मोज़ज़ों और करामात का भी हाल पढा होगा और यह भी ज़रूर नज़र से गुज़रा होगा कि उस पर इंजील नाज़िल हुई। अब हमें मुनासिब है कि इस की आस्मानी तालीम और मुकाशफ़ा से फ़ायदा उठाएं। हमें उसकी किताब आस्मानी इंजील की तिलावत करनी लाज़िम है और इसकी निस्बत ये जानना हम पर फ़र्ज़ है कि उसने एक जमात कसीर को चंद रोटियों से खिलाकर सैर किया। सदहा बल्कि हज़ार हज़ार मरीज़ों को

चंगा किया, लंगड़ों को पांव दीए, मफ़लूजों और मबरूसों को सेहत बख़्शी, तूफ़ान में समुंद्र पर चला। देवों को अपने सुखन से निकाला। गूंगों को गोयाई की ताक़त और अँधों को बीनाई की कुदरत बख़्शी, दीवानों को शिफ़ा दी और मुर्दों को ज़िंदा किया। ऐ अज़ीज़ो दोस्तो उसकी तालीम पर ग़ौर करो। उसकी तम्सीलों पर सोचो। और उस तरीक़ा नजात को इख़्तियार करो जो कि उसने ईमानदारों के लिए तैयार किया है।

क्योंकि इस पाक किताब में ये साफ़ साफ़ लिखा है कि ईसा इब्ने मरियम आस्मान से इस दार-ऐ-फ़ानी में इसलिये आया कि गुनाहगारों के लिए अपनी जान दे और हमें ख़लासी बख़्शे। उसने इसलिये जामा इन्सान इख़्तियार किया है कि हमारा भाई बन कर हमारे लिए अपनी जान-निसार करे। पस वो इस दुनिया में ज़िंदा रहा और मर गया। फिर मुर्दों में से जी उठा और आस्मान पर चढ़ गया और अल्लाह तआला जलशाना व जलाला के दहने हाथ बैठा है कि हम गुनहगार ज़लील व ख़वार इन्सानों को नजात अबदी व ह्यात जाविदानी व मीरास ग़ैर-फ़ानी बख़्शे।

ये सारा बयान इसी पाक किताब में जिसे बाइबल मुक़द्दस कहते हैं दर्ज है और जिसकी निस्वत आपके नबी ताकीदन अपनी ज़बान मुबारक से ये फ़रमाते हैं कि वो कलाम-उल्लाह है। ऐ दोस्तो क्या आप खुद इस खुशख़बरी का मुतालआ करके अपने तई हलक़ा मोमिनीन में दाख़िल ना करेंगे और इस हक़ को खुद तहक़ीक़ ना कर लेंगे जिस पर अंजहानी व आंजहानी ह्यात व सरोर मौकूफ़ है?

और अगर हम खुदा बाप के पास उस के मुबारक बेटे के नाम से आएँ और दिली तौबा करें कि जो कुछ हमें करना था वो हमसे नहीं हुआ और जो कुछ करना ना था वो हमसे हुआ तो वो अपनी रहीमी व करीमी से हमारे गुनाहों को माफ़ करेगा और हमें इत्मीनान दिली व तस्कीन कलबी इनायत करेगा। आओ ऐ दोस्तो अब ताख़ीर ना करो मिसराअ ताजील ख़ूब नेस्त मगर दरअमल ख़ैर, जल्दी करो वक़्त को ग़नीमत जानो खुदावंद मसीह पर ईमान लाओ तो तुम विलादत सानी पाओगे क्योंकि खुदा बाप ने ये वाअदा किया है कि जो उस के बेटे पर ईमान लाएँगे वो नया जन्म और रूह-उल-कूददस की हिदायत व अआनत पाएँगे। ये वाअदा खुदा का कुल पैरवान ईसा कलाम-उल्लाह के साथ है। क्योंकि फ़क़त खुदावंद मसीह ही अकेला नजात-दिहंदा है। उसी के वसीले गुनहगार इन्सान खुदा की बंदगी लायक़ तौर पर अदा कर सकता है और जन्नत के लायक़ बन सकता है। जो कोई खुदावंद मसीह पर ईमान लाता है वो रूह में तक्रवियत पाता है। रास्तबाज़ी में मज़बूत हो जाता है। और अंदरूनी गुनाह से रिहाई पाकर शैतान लईन की कुदरत से नजात व ख़लासी हासिल करता है।

अब ज़रा इस पाक दावत पर ग़ौर फ़रमाएं बाब 4:11-16 पस आओ हम कोशिश करें कि उस आराम में दाख़िल होवें ऐसा ना हो कि उस ना-फ़रमाअनी के नमूना पर कोई अमल करके गिर पड़े। क्योंकि खुदा का कलाम ज़िंदा और तासीर करने वाला और हर एक दो धारी तलवार से तेज़-तर है और जान और रूह और बंद बंद और गूदे गूदे को जुदा करके गुज़र जाता है और दिल के ख़यालों और इरादों को जाँचता है। और कोई मख़लूक़ उससे छिपी नहीं बल्कि जिससे हमको काम

है सब कुछ उस की नज़रों में खुला हुआ और बे पर्दा है। पस जिस हालत में हमारा एक ऐसा बुजुर्ग सरदार काहिन जो अफलाक से गुज़र गया खुदा का बेटा येसूअ है तो चाहिये कि हम अपने इकरार पर साबित-क़दम रहें। क्योंकि हमारा ऐसा सरदार काहिन नहीं जो हमारी सुस्तियों में हमदर्द ना हो सके। बल्कि ऐसा जो सारी बातों में हमारे मानिंद आजमाया गया। पर उसने गुनाह ना किया। इसलिये आओ हम फ़ज़ल के तख़्त के पास दिलेरी के साथ जाएं ताकि हम पर रहम होवे और फ़ज़ल जो वक़्त पर मददगार हो हासिल करें। पस आओ हम आगे को अपने लिये ना जिएँ बल्कि मसीह की मुहब्बत के वास्ते अपनी ज़िंदगी बसर करें। क्योंकि उसने हमारे लिये अपनी जान फ़िदा की। ताकि हमको सारी शरारत व ख़बासत से पाक साफ़ करे कि हम उस की ख़िदमत के लिये एक ख़ास उम्मत और बर्गुज़ीदा क़ौम बन जाएं जो नेकोकारी में सरगर्म हों। इस जहाँ-ऐ-फ़ानी में अपनी हयात-ऐ-मुस्तआर ख़त्म करके आख़िरकार उस दयार मुक़द्दस में पहुंचे जहान गुनाह नहीं बल्कि फ़क़त मुहब्बत और खुदाई ही अल-क़य्यूम की ख़िदमत व इबादत है।

रसूल मक़बूल मुक़द्दस पौलुस का ये क़ौल हमारे मिस्दाक़ हो अब हम आईना से दहनदिलासा देखते हैं पर उस वक़्त रूबरू देखेंगे। इस वक़्त मेरा इल्म नाक़िस है पर उस वक़्त मैं बिल्कुल जानूंगा जिस तरह कि मैं सरासर पहचाना गया। फ़क़त

फिर और ये कलाम भी मुलाहिज़ा फ़रमाए मुकाशफ़ात बाब 7 आयत 15-17 :-

इसी वास्ते वह खुदा के तख़्त के आगे हैं और उसकी हैकल में रात-दिन उस की बंदगी करते हैं और वोह जो तख़्त पर बैठा है उनके दरमियान सुकूनत करेगा। वह फिर भूखे नहीं होंगे और ना प्यासे और वह न धुप न कोई गर्मी उठाएँगे क्योंकि बर्रा जो तख़्त के बीचो बीच है उनकी गल्लाबानी करेगा और उन्हें पानियों के ज़िंदा सुतून पास पहुंचाएगा और खुदा उनकी आँखों से हर एक आसूं पोछेगा ।

ऐ दोस्तो खुदा तुम्हारे और मेरे साथ ऐसा ही करेगा हम दोनों के दोनों अबदी हयात व सरोर में शरीक हों आमीन।

ज़मीमा अहद-ऐ-अतीक़ व अहद-ए-जदीद से ज़ाइद इक़तबासात

उम्मीद है कि इन ज़ाइद इक़तिबासों के मुलाहिज़ा व मुतालआ करने से इस रिसाले के पढ़ने वालों को फ़ायदा होगा और वो उन को पढ़ कर इस बात के मुश्ताक़ होंगे कि बाइबल का मुतालआ करें और उसके मज़ामीन से वाक़िफ़ हो जाएं ज़ेल में दस अहक़ाम जिसे हज़रत मूसा को कोह-ऐ-सेना पर दीए गए लिखे जाते हैं । देखो ख़ुरूज बाब 2: 3-17 :-

- 1- मेरे हुज़ूर तेरे लिए दूसरा ख़ुदा ना हुऐ।
- 2- तू अपने लिए कोई मूर्त या किसी चीज़ की सूरत जो ऊपर आस्मान पर या नीचे ज़मीन पर या पानी में ज़मीन के नीचे है मत बना। तो उनके आगे अपने तई मत झुका और ना उनकी इबादत कर।
- 3- तू ख़ुदावंद अपने ख़ुदा का नाम बेफ़ाइदा मत ले।
- 4- तू सबत का दिन पाक रखने के लिए याद कर।
- 5- तू अपने माँ बाप को इज़ज़त दे।
- 6- तू खून मत कर।
- 7- तू ज़िना मत कर।
- 8- तू चोरी मत कर।
- 9- तू अपने पड़ोसी पर झूठी गवाही मत दे ।
- 10- तू अपने पड़ोसी के घर का लालच मत कर तू अपनी पड़ोसी की जोरू और उसके गुलाम और उसकी लौंडी और उसके बेल और इस के गधे और किसी चीज़ का जो तेरे पड़ोसी की है लालच मत कर।

फिर किताब ज़बूर से मुलाहिज़ा फ़रमाऐ ज़बूर 23 :-

ख़ुदावंद मेरा चौपान है मुझे कुछ कमी नहीं वो मुझे हरियाले चरागाहों में बिठलाता है। वो राहत के चशमों की तरफ़ मुझे ले पहुँचाता है। वो मेरी जान फेर लाता है और अपने नाम के

खातिर मुझे सदाक़त की राहों में ले फिरता है। बल्कि जब मैं मौत के साया कि वादी में फिरे तो मुझे कुछ ख़ौफ़ व ख़तरा ना होगा क्योंकि तू मेरे साथ है। तेरी छड़ी और तेरी लाठी वही मेरी तसल्ली का बाइस है। तू मेरे दुश्मनों के रूबरू मेरे आगे दस्तर ख़वान बिछाता है तू मेरे सर पर तेल मलता मेरा पियाला लबरेज़ होके छलकता है। लाकलाम मेहरबानी और रहमत उम्र-भर मेरे साथ साथ चलेंगे और मैं हमेशा खुदावंद के घर में रहूँगा।

फिर हज़रत दाऊद के गुनाह का इकरार सुनिए और उसके शिकस्ता व ख़सता दिल की मुनाजात पर ध्यान कीजिए जो वो गुनाहों की माफ़ी के वास्ते बद्रगाह ईलाही करता है देखो ज़बूर 51:1-17 :-

ऐ खुदा अपनी रहमदिली के मुताबिक़ मुझ पर शफ़क़त कर अपनी रहमतों की कसरत के मुवाफ़िक़ मेरे गुनाह मिटा दे। मेरी बुराई से मुझे ख़ूब धो और मेरी ख़ता से मुझे पाक कर। कि मैं अपने गुनाहों को मान लेता हूँ और मेरी ख़ता हमेशा मेरे सामने है मैंने तेरा ही गुनाह किया है और तेरी ही हुज़ूर बदी की है ताकि तू अपनी बातों में सादिक़ ठहरे और जो अदालत करे तो तू पाक ज़ाहिर हो। देखो मैंने बरुआई में सूरत पकड़ी और गुनाह के साथ मेरी जान ने मुझे पेट में लिया। देख तू अंदर की सच्चाई चाहता है सौ बातिन में मुझको दानाई सिखला। ज़ोफ़ानसे से मुझे पाक कर कि मैं साफ़ हो जाऊं। मुझको धोओ कि मैं बर्फ़ से सफ़ैद होऊं। मुझे खुशी और ख़ुरमी की ख़बर सुना कि मेरी हड्डियां जिन्हें तूने तोड़ डाला शादमान हों। मेरे गुनाहों से चशमपोशी कर और मेरी सारी बुराईयां मिटा डाल। ऐ खुदा मेरे अंदर एक पाक-दिल पैदा कर और एक मुस्तक़ीम रूह मेरे बातिन में नए सरसे डाल मुझको अपने हुज़ूर से मत हाँक। और अपनी रूह पाक मुझसे ना निकाल अपनी नजात की शादमानी मुझको फिर इनायत कर और अपनी आज़ाद रूह से मुझको सँभाल। तब मैं ख़ताकारों को तेरी राहें सिखलाऊँगा और गुनहगार तेरी तरफ़ रुजू करेंगे। ऐ खुदा मेरी नजात देने वाले खुदा मुझे ख़ून के गुनाह से रिहाई दे कि मेरी ज़बान तेरी सदाक़त के गीत बुलंद आवाज़ से गाय। ऐ खुदावंद मेरे लबों को खोल दे तो मेरा मुँह तेरी सताइश बयान करेगा। तो ज़बीहे से खुश नहीं होता नहीं तो मैं देता सोख़्तनी कुर्बानी में तेरी खुशनुदी नहीं। खुदा के ज़बीहे शिकस्ता जान हैं दिल-शिकस्ता और खाकसार को ऐ खुदा तू हक़ीर ना जानेगा।

फिर यसअयाह नबी रोज़े कि निस्वत ये तालीम देता है देखो यसअयाह बाब 58:5-11 :-

क्या वो रोज़ा है जो मुझको पसंद है, ऐसा दिन कि इस में आदमी अपनी जान को कह दे और अपने सर को झाओ की तरह झुकाए और टाट और राख बिछाए?

क्या तुम रोज़ा और ऐसा दिन जो खुदावंद का मंज़ूरे नज़र हो कहोगे क्या वो रोज़ा जो मैं चाहता हूँ ये नहीं कि जुल्म की जंजीरें तोड़ें और जुए के बंधन खोलें और मज़लूम को आज़ाद करें बल्कि हर एक जुए को तोड़ डालें। क्या ये नहीं कि तू अपनी रोटी भूकों को खिलाए और मिस्कीनों को जो आवारा हैं अपने घर में लाए और जब किसी को नंगा देखे तो उसे पहनाए और तू अपने हम-जिंस से रूपोशी ना करे। तब तेरी रोशनी सुबह की मानिंद फूटेगी। और तेरी आक्रिबत की

तरक्की जल्द ज़ाहिर होगी तेरी रास्तबाज़ी तेरे आगे चलेगी और खुदावंद का जलाल तेरे गिर्द चमकेगा। तब तू पुकारेगा और खुदावंद जवाब देगा तो चिल्लाएगा और वो बोल उठेगा मैं यहां हूँ। अगर तू इस जूए को और उंगलीयों से इशारा करने को और हर्ज़ा गोई को अपने दर्मियान से दूर करेगा। और अगर तू अपने दिल को भूके की तरफ़ माइल करे और तू आजुरदा दिल को सैर करे तो तेरा नूर तारीकी में तुलु करेगा और तेरी तीरगी दोपहर के मानिंद होगी। और खुदावंद सदा तेरी रहनुमाई करेगा और खुशक साली में तेरा जी भरेगा और तेरी हड्डियों को पुरमज़ करेगा तू सेराब बाग़ के मानिंद होगा और पानी के चश्मे के मानिंद जिसका पानी ना घटे।

फिर देखो इसी नबी की किताब के बाब 57:15 को :-

जिसका नाम कुद्दूस है यूं फ़रमाता है कि मैं बुलंद और मुक़द्दस मकान में रहता हूँ और इस के साथ भी जो शिकस्ता-दिल और फ़रोतन ही कि आजिज़ों की रूह को जिलाऊं और खाकसारों के दिल को ज़िंदा करूँ।

अब मैं अहद-ऐ-अतीक़ के आखिरी नबी का क़ौल जिसको मलाकी कहते हैं पेश करता हूँ देखो मलाकी बाब 3:16-17 में जहां मर्कूम है :-

तब उन लोगों ने जो खुदावंद से डरते थे आपस में बार-बार गुफ़्तगु की और खुदावंद ने कान धर कर सुना और उनके लिए जो खुदावंद से डरते और उन के नाम को याद रखते थे उस के आगे यादगारी का दफ़्तर लिखा गया और वो मेरा खास ख़ज़ाना होंगे। उस दिन में जिसे मैंने मुक़र्रर किया है रब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है और जिस तरह कोई अपने बेटे पर जो इसका ख़िदमत गुज़ार है शफ़क़त करता है मैं उन पर शफ़क़त करूंगा।

अब ज़रा इंजील शरीफ़ की तरफ़ रुजू हो कर मसीह की तालीम पर ग़ौर कीजिए जो उसने दुआ की निस्बत हमें दी है मुक़द्दस मत्ती बाब 6:5-15 :-

जब तू दुआ मांगे रियाकारो की मानिंद ना हो क्योंकि वह इबादतखानों में और रास्तों के कोनो में खड़े होकर मांगने को दोस्त रखते हैं ताकि लोग उन्हें देखें। मैं तुमसे सच कहता हूँ के वह अपना बदला पा चुके। लेकिन जब तू दुआ मांगे अपनी कोठरी में जा और अपना दरवाज़ा बंद करके अपने बाप से जो पोशीदगी में है दुआ मांग और तेरा बाप जो पोशीदगी में देखता है ज़ाहिर में तुझे बदला देगा और जब दुआ मांगते हो ग़ैर कौमों के मानिंद बेफ़ाइदा बक बक मत करो क्योंकि वह समझते हैं के उनकी ज़्यादागोई से इनकी सुनी जाएगी, पर उनके मानिंद मत हो क्योंकि तुम्हारा बाप तुम्हारे मांगने के पहले जानता है कि तुम्हे किन किन चीजों कि ज़रूरत है पस तुम इस तरह दुआ मांगों ऐ हमारे बाप जो आस्मान पर है तेरे नाम कि तक्रदीस हो, तेरी बादशाहत आवे तेरी मर्ज़ी जिस तरह आस्मान पर है ज़मीन पर भी बर आवे हमारे रोजाना कि रोटी आज हमको बख़्श और जिस तरह हम अपने कर्ज़दारों को बख़्शते हैं तू अपने दीं हमको बख़्श दे और हमें आजमाइशों

में न डाल बल्कि बुराई से बचा क्योंकि बादशाहत और कुदरत और जलाल हमेशा तेरे ही हैं आमीन
I

अब खुदावंद मसीह की तम्सीलों में से एक तम्सील बतौर नमूना लिखता हूँ मुलाहिजा फ़रमाएं
मुक़द्दस मत्ती बाब 25:1-13 :-

उस वक़्त आस्मान की बादशाही इन दस कुँवारियों की मानिंद होगी जो अपनी मशालें लेकर दुल्हा के इस्तिक़बाल को निकलें । उनमें पाँच बेवकूफ़ और पाँच अक्लमंद थीं। जो बेवकूफ़ थीं उन्होंने अपनी मशालें तो ले लीं मगर तेल अपने साथ ना लिया । मगर अक्लमंद ने अपनी मशालों के साथ अपनी कुप्पियों में तेल भी ले लिया। और जब दुल्हे ने दर लगाई तो सब ऊँघने लगीं और सौ गईं । आधी रात को धूम मची कि देखो दुल्हा आ गया ! उसके इस्तिक़बाल को निकलो। उस वक़्त वो सब कुँवारियां उठकर अपनी अपनी मशाल दुरुस्त करने लगीं। और बेवकूफ़ों ने अक्लमंदों से कहा अपने तेल में से कुछ हम को भी दे दो क्योंकि हमारी मशालें बुझी जाती हैं। अक्लमंदों ने जवाब दिया कि शायद हमारे-तुम्हारे दोनों के लिए काफ़ी ना हो बेहतर ये कि बेचने वाले के पास जाकर अपने वास्ते मोल ले लो। जब वो मोल लेने जा रही थीं तो दुल्हा आ पहुंचा और जो तैयार थीं वो उस के साथ शादी के जश्न में अंदर चली गईं और दरवाज़ा बंद हो गया। फिर वो बाक़ी कुँवारियां भी आईं और यूँ कहने लगीं ऐ मौला ! ऐ मौला हमारे लिए दरवाज़ा खोल दीजिए । उसने जवाब में कहा मैं तुमसे सच्चा कहता हूँ कि मैं तुम को नहीं जानता पस जागते रहो क्योंकि तुम ना उसको जानते हो ना उस घड़ी को।

फिर इस दूसरी तम्सील को भी देखिए जो ताख़ीर के ख़तरे को बयान करती है मुक़द्दस लूका बाब 13:6-9 :-

इसके बाद आपने उन्हें एक तम्सील इर्शाद फ़रमाई किसी आदमी ने अपने अंगूर के बाग़ में इंजीर का दरख़्त लगा रखा था। वो इस में फल ढूढने आया मगर ना पाया। तब उसने बाग़वान से कहा देखो मैं पिछले तीन बरस से इस इंजीर के दरख़्त में फल ढूढने आता रहा हूँ और कुछ नहीं पा सका हूँ। उसे काट डालो । ये क्यों जगह घेरे हुऐ है ? लेकिन उसने जवाब में से कहा : मालिक ! इसे इस साल और बाक़ी रहने दें, मैं इस के इर्द गर्द खुदाई करके खाद डालूंगा। अगर ये आइन्दा फल लाया तो ख़ैर वर्ना इसे कटवा देना।

अब मुक़द्दस युहन्ना का बयान कलाम के निस्बत सुनिए युहन्ना बाब 1:1-14 :-

इब्तिदा में कलाम था और कलाम खुदा के साथ था और कलाम ही खुदा था। यही इब्तिदा में खुदा के साथ था। सब चीज़ें उस के वसीले से ख़ल्क हुईं और जो कुछ ख़ल्क हुआ है इस में से कोई चीज़ भी उस के बग़ैर ख़ल्क नहीं हुई। उस में ज़िंदगी थी और वो ज़िंदगी आदमीयों का नूर थी। और नूर तारीकी में चमकता है और तारीकी ने उसे क़बूल ना किया। एक आदमी यहया नाम आ मौजूद हुऐ और जो खुदा की तरफ़ से भेजे गऐ थे। ये शहादत देने को आऐ ताकि सब उसके वसीले से

ईमान लाएं। वो खुद तो नूर ना थे मगर नूर की शहादत देने को आये थे। हकीकती नूर जो हर एक आदमी को रोशन करता है दुनिया में आने को था। वो दुनिया में थे और दुनिया उसके वसीला से खलक हुई और दुनिया ने उसे ना पहचाना। वो अपने घर आये और उनके अपनों ने उन्हें कबूल ना किया। जिन्होंने उनको कबूल किया उसने उन्हें खुदा के फ़र्जन्द बनने का हक़ बख़्शा यानी उन्हें जो आप पर ईमान लाते हैं आप ना खून से ना जिस्म की ख्वाहिश से ना इन्सान के इरादे से बल्कि खुदा से पैदा हुऐ। ओर कलमा मुजस्सम हुआ और फ़ज़ल और सच्चाई से मामूर हो कर हमारे दर्मियान रहा और हमने उनकी ऐसी अज़मत देखी जैसी खुदा के महबूब की।

अब मैंने बहुत आपकी समाअ ख़राशी की मगर ज़रा मसीही नजात व महब्वत का बयान भी जो पौलुस रसूल ने किया है मुलाहिज़ा कीजिए दखो पहला कुरुन्थियो बाब 13:1-7 :-

अगर मैं आदमीयों और फ़रिशतों की ज़बानें बोलूँ और मुहब्वत ना करूँ तो मैं ठनठनाता पीतल या झंझाती झाँझ हूँ। और अगर मुझे नबुव्वत मिले और सब भेदों और कुल इल्म की वाक़फ़ीयत हो और मेरा ईमान यहां तक कामिल हो की पहाड़ों को हटा दूँ और मुहब्वत ना रखू तो मैं कुछ भी नहीं। और अगर अपना सारा माल ग़रीबों को खिला दूँ या अपना बदन जलाने को दे दूँ और मुहब्वत ना रखूँ तो मुझे कुछ भी फ़ायदा नहीं। मुहब्वत साबिर है और मेहरबान, मुहब्वत हसद नहीं करती, मुहब्वत शेख़ी नहीं मारती और फूलती नहीं, नाज़ेबा काम नहीं करती, अपनी बेहतरी नहीं चाहती, झुँझलाती नहीं, बद-गुमानी नहीं करती, बदकारी से खुश नहीं होती बल्कि सच्चाई से खुश होती है, सब कुछ सह लेती है, सब कुछ यकीन करती है, सब बातों की उम्मीद रखती है, सब बातों की बर्दाश्त करती है। गरज़ ईमान, उम्मीद मुहब्वत ये तीनों दाइमी हैं मगर अफ़ज़ल इनमें मुहब्वत है।

अब मुक़द्दस पौलुस रसूल का बयान क्रियामत के निस्बत जो पहला कुरुन्थियों बाब 15:32-58 में है मुलाहिज़ा हो :-

अगर मैं इन्सान की तरह इफ़सस में दरिंदों से लड़ा तो मुझे क्या फ़ायदा ? अगर मुर्दे ना ज़िंदा किये जाएंगे तो आओ खाओ पियों क्योंकि कल तो मर ही जाएंगे। फ़रेब ना खाओ, बुरी सोहबतें अच्छी आदतों को बिगाड़ देती हैं। सच्चे होने के लिए होश में आओ और गुनाह ना करो क्योंकि वाअज़ खुदा से नावाक़िफ़ हैं। मैं तुम्हें शर्म दिलाने को ये कहता हूँ। अब कोई ये कहेगा कि मुर्दे किस तरह जी उठते हैं और कैसे जिस्म के साथ आते हैं? ऐ नादान ! तुम खुद जो कुछ बोते हो जब तक वो ना मर जाये ज़िंदा नहीं किया जाता। और जो तुम बोते हो ये वो जिस्म नहीं जो पैदा होने वाला है बल्कि सिर्फ़ दाना है। ख्वाह गेहूँ का ख्वाह किसी और चीज़ का। मगर खुदा ने जैसा इरादा कर लिया वैसा ही इस को जिस्म देते हैं और हर एक बीज को इस का खास जिस्म, सब गोशत यकसाँ गोशत नहीं बल्कि आदमीयों का गोशत और है, चौपाईयों का गोशत और, परिंदों का गोशत और है मछलीयों का गोशत और, आस्मानी भी जिस्म हैं और ज़मीनी भी मगर आस्मानियों की बुजुर्गी और है ज़मीनियों की और, आफ़ताब की बुजुर्गी और है महताब की बुजुर्गी और, सितारों

की बुजुर्गी और है क्योंकि सितारे, सितारे की बुजुर्गी में फर्क है। मुर्दों की क्रियामत भी ऐसी ही है। जिस्म फ़ना की हालत में बोया जाता है और बक्रा की हालत में जी उठता है। बे-हुरमती की हालत में बोया जाता है और बुजुर्गी की हालत में जी उठता है। कमज़ोरी की हालत में बोया जाता है और कुव्वत की हालत में जी उठता है। नफ़सानी जिस्म बोया जाता है और रुहानी जिस्म जी उठता है। जब नफ़सानी जिस्म है तो रुहानी जिस्म भी है। चुनांचे लिखा भी है कि पहला आदमी यानी आदम ज़िंदा-नफ़स बना पिछला आदम ज़िंदगी बख़्शने वाली रूह बना। लेकिन रुहानी पहले ना था बल्कि नफ़सानी था। इस के बाद रुहानी हुआ। पहला आदि ज़मीन से यानी खाकी था दूसरा आदमी आस्मानी है। जैसा वो खाकी था वैसा ही और खाकी भी हैं और जैसा वो आस्मानी है वैसा ही और आस्मानी भी हैं। और जिस तरह हम इस खाकी की सूरत पर हुऐ उसी तरह उस आस्मानी की सूरत पर भी होंगे। ऐ दीनी भाईयों ! मेरा मतलब ये है कि गोश्त और खून खुदा की बादशाही के वारिस नहीं हो सकते और ना फ़ना बक्रा की वारिस हो सकती है। देखो मैं तुमसे राज़ की बात कहता हूँ। हम सब तो नहीं सोएँगे मगर सब बदल जाएँगे। और यह एक दम में, एक पल में, पिछला नर्सिंगा फूँकते ही होगा क्योंकि नर्सिंगा फूँका जाएगा और मुर्दे ग़ैर-फ़ानी हालत में उठेंगे और हम बदल जाएँगे। क्योंकि ज़रूर है कि ये फ़ानी जिस्म बक्रा का जामा पहने और यह मरने वाला जिस्म हयात अबदी का जामा पहने। और जब ये फ़ानी जिस्म बक्रा का जामा पहन चुकेगा और ये मरने वाला जिस्म हयात अबदी का जामा पहन चुकेगा तो वो क़ौल पूरा हो जाएगा जो लिखा है कि मौत फ़तह का लुक़मा हो गई। ऐ मौत तेरी फ़तह कहाँ रही? ऐ मौत तेरा डंक कहाँ रहा? मौत का डंक गुनाह है और गुनाह का ज़ोर शरीयत है। मगर खुदा का शुक्र है जो हमारे खुदावंद ईसा मसीह के वसीले से हम को फ़तह अता फ़रमाते हैं। पस ऐ दीनी भाईयों ! साबित क़दम और क़ायम रहो और खुदा के काम में हमेशा अफ़ज़ायश करते रहो क्योंकि ये जानते हो कि तुम्हारी मेहनत खुदा में बेफ़ाइदा नहीं है।

वो भी सुनो जो मुक़द्दस युहन्ना रसूल कहता है कि 1युहन्ना 3:1 देखो खुदा ने हमसे कैसी मुहब्बत की है कि हम खुदा के फ़र्ज़द कहिलाए और हम हैं भी। दुनिया हमें इसलिये नहीं जानती कि उसने उन्हें भी नहीं जाना। अज़ीज़ो ! हम इस वक़्त खुदा के फ़र्ज़द हैं और अभी तक ये ज़ाहिर नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे। इतना जानते हैं कि जब वो ज़ाहिर होंगे तो हम भी उनकी मानिंद होंगे क्योंकि उनको वैसा ही देखेंगे जैसा वो हैं। और जो कोई उनसे ये उम्मीद रखता है अपने आपको वैसा ही पाक करता है जैसे वो पाक हैं। जो कोई गुनाह करता है वो शराअ की मुख़ालिफ़त करता है और गुनाह शरियत कि मुख़ालिफ़त ही है। और तुम जानते हो कि वो इसलिये ज़ाहिर हुऐ थे कि गुनाहों को उठाले जाएं और उन की ज़ात में गुनाह नहीं। जो कोई उनमें क़ायम रहता है वह गुनाह नहीं करता। जो कोई गुनाह करता है ना उसने उन्हें देखा और ना जाना है।

आस्मानी मीरास की निस्वत मुक़द्दस पतरस रसूल का बयान गौरतलब है देखो 1 पतरस 1:3-5

:-

हमारे खुदावंद ईसा मसीह के खुदा की हम्द हो जिन्होंने खुदावंद ईसा मसीह के मुर्दों में से जी उठने के बाद अपनी बड़ी रहमत से हमें जिंदा उम्मीद के लिए नए सिरे से पैदा किया। ताकि एक गैर-फ़ानी और बेदाग़ और लाज़वाल मीरास को हासिल करें। वो तुम्हारे वास्ते (जो खुदा की कुदरत से ईमान के वसीले से इस नजात के लिए जो आख़िरी वक़्त में ज़ाहिर होने को तैयार है हिफ़ाज़त किये जाते हो) आस्मान पर महफूज़ है।

आख़िर में मुक़द्दस युहन्ना रसूल मुकाशफ़ात की किताब में आस्मान का बयान यूं करता है देखो मुकाशफ़ात 21:22-24 :-

और मैंने इसमें कोई मुक़द्दस ना देखा इसलिए कि खुदावंद खुदा कादिर-ऐ-मुतलक़ और बर्बा उस का मुक़द्दस हैं। और इस शहर में सूरज या चांद की रोशनी की कुछ हाज़त नहीं क्योंकि खुदा तआला की बुजुर्गी ने उसे रोशन कर रखा है और बर्बा उसका चिराग़ है। और कौमें उस की रोशनी में चलीं फिरेंगी और ज़मीन के बादशाह अपनी शानोशौकत का सामान इस में लाएंगे।

और 22:1, 5, 10, 21 :-

फिर उसने आब-ऐ-हयात की एक साफ़ नदी मुझे दीखाई जो बिलौर की तरह शफ़फ़ाफ़ और खुदा और बर्बे के तख़्त से निकलती थी। और इस की सड़क के बीच और इस नदी के वार पार जिंदगी का दरख़्त था जो बारह किस्म के फल लाता और हर एक महीने में अपना फल देता था और इस दरख़्त के पत्ते कौमों की शिफ़ा के वास्ते थे। और फिर कोई लानत ना होगी और खुदा और बर्बे का तख़्त इस में होगा और उसके बंदे उसकी बंदगी करेंगे। और वो उस का मुँह देखेंगे और उस का नाम उनके माथों पर होगा। और वहां रात ना होगी और वो चिराग़ और सूरज की रोशनी के मुहताज नहीं फिर उसने मुझसे कहा कि तू इस किताब की नबुव्वत की बातों पर मुहर मत रख क्योंकि नज़दीक है जो नारास्त है सो नारास्त ही रहे और जो नजिस है सो नजिस ही रहे और जो रास्तबाज़ है सो रास्तबाज़ ही रहे और जो मुक़द्दस है सो मुक़द्दस ही रहे और देखो मैं जल्द आता हूँ और मेरा अज़्र मेरे साथ है ताकि हर एक को उसके काम के मुवाफ़िक़ बदला दूँगा मैं अल्फ़ा और ओमेगा, इब्तिदा और इतिहा अव्वल और आख़िर हूँ। मुबारक वो हैं जो उसके हुक़मों पर अमल करते हैं ताकि जिंदगी के दरख़्त पर उनका इख़्तियार हो और वो इन दरवाज़ों से शहर में दाख़िल होए मगर कुत्ते और जादूगर और हरामकार और खूनी और बुतपरस्ती और झूठी बात का हर एक पसंद करने और घड़ने वाला बाहर रहेगा। खुदावंद मसीह ने अपना फ़रिश्ता इस लिए भेजा कि जमाअतों के बारे में तुम्हारे आगे इन बातों की शहादत दे। मैं दाऊद की असल व नसल और सुबह का चमकता हुआ सितारा हूँ। और रूह और दुल्हन कहती हैं आ और सुनने वाला भी कहे आ। और जो प्यासा हो वो आए और जो कोई चाहे आब-ऐ-हयात मुफ़्त ले।

मैं हर एक आदमी के आगे जो इस किताब की नबुव्वत की बातें सुनता है शहादत देता हूँ कि अगर कोई आदमी उनमें कुछ बढ़ाए तो खुदा इस किताब में लिखी हुई आफ़तें इस पर बड़ा देगा। और अगर कोई इस नबुव्वत की किताब की बातों में से कुछ निकाल डाले तो खुदा इस जिंदगी के

दरख्त और मुकद्दस शहर में से जिनका इस किताब में ज़िक्र है उसका हिस्सा निकाल डालेगा। जो इन बातों की शहादत देता है वो ये कहता है कि बेशक में जल्द आने वाला हूँ। आमीन। ऐ खुदावंद ईसा आईए। खुदावंद येसु का फ़ज़ल मुकद्दसों के साथ रहे। आमीन।

ग़ज़ल

जज़ाकल्लाह ये ख़शख़बरी मुझे जिसने सूनाई है
मसीहा ही के ख़ूँ से सारे इस्यानों की सफ़ाई है
हुआ कुंदा नगीना दिल पर जिसके नाम ईसा का
वहां शैतान से मलऊन की फिर कब रसाई है
मिला विरसा में हमको गुनाह लो बाप दादों से
यही देखो हमारे बावा-आदम की कमाई है
हज़ारों शक्र ईसा का उठाया बार इस्याँ का
मुबारक हो तुम्हें लोगो मसीहा से रिहाई है
तुही सच्चा मुंजी है तू इकलौता ख़ुदा का है
मऐ ख़र सनद ए हक़ तुही ने हमको पिलाइ है
मुबारक फिर मुबारक फिर मुबारक नाम हो तेरा
दी अपनी जान तुने और हमारी जां छुड़ाई है
उसी की बंदगी आज़ादगी लारेयब है यारो
हमारी रूह तो इस ने गुलामी से छुड़ाई है
कुचल डालंगा ओ शैतां तुझे फ़ज़ल-ऐ-मसीहा से
नहीं तो जानता आसी को ईसा का सिपाही है

गज़ल

दिला क्यों रोज़-ऐ-महशर से हिरासाँ और लज़ाँ हूँ
वसीला मज़हर हक़ है उसी पे मैं तो नाज़ाँ हूँ
मेरा ईमां तो कायम है उसी बहर शफ़ाअत पर
तो फिर ऐश दवामी का दिला क्योंकर ना शायं हूँ
खड़ा हूँ बार इस्याँ का लिये सर पर ख़दावंदा
रिहाई दे मुझे ख़ालिक़ में गिर्याँ और नालां हूँ
कहाँ जाऊं मैं ग़मदीदा गुनाहों से शर्मिदा
खुदा या रहम कर मुझ पर मैं पकड़े तेरा दामाँ हूँ
नदादी ज़ात मुतलक़ ने ना हो मायूस ऐ आसी
हयात-ऐ-दाइमी ले मुझसे में फ़र्ज़द यज़दाँ हूँ